झारखंड के विभूति

सिदो–कान्हू , चाँद–भैरव

⇒ सिदो, कान्हू चाँद तथा भैरव चार भाई थे जो चुनी मांझी के पुत्र थे।

⇒इन चारो का जन्म क्रमशः 1815, 1820, 1825 तथा 1835 में हुआ।

⇒इन्हे हुल/संथाल विद्रोह के महानायक के तौर पर जाना जाता है।

○ आंदोलनकारी के रूप में

⇒30 जून 1855 ई. को सिदो–कान्हू के बुलावे पर 400 गांवो के लगाग 10,000 आदिवासी भोगनाडीह पहुंचे और हुल–हुल के नारो के साथ संथाल विद्रोह का आगाज हुआ।

CAREER FOUNDATION

⇒सिदो ने नारा दिया –"करो या मरो , अंग्रेजो हमारी माटी छोड़ो"

⇒इस व्रिदोह मे सिदो कान्हु की बहन फुलो–झानो ने भी बढ चढ कर भाग लिया।

⇒30 जून को हर वर्ष हुल दिवस मनाया जाता है।

⇒हुल का अर्थ –क्रांति/बगावत

⇒इसे संथाल परगना की प्रथम जनक्रांति की संज्ञा दी गई

⇒कार्ल मार्क्स ने इसे भारत की प्रथम जनक्रांति कहा ।

⇒बहराइच में अंग्रेजो और आंदोलनकारियों की लड़ाई में गोली लगने से चांद एवं भैरव की मौत हो गई।

© Click on :- Career foundation

⇒सिदो और कान्हु को गिरफ्तार कर के भोगनाडीह गांव में खुलेआम एक पेड़ में टांग कर फांसी की सजा दे दी गई।

संथाल विद्रोह से संबधित कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

- संथाल विद्रोह को संथाल परगना की प्रथम जनक्रांति कहा जाता है।
- संथाल विद्रोह को मुक्ति आंदोलन की संज्ञा भी दी जाती है। इसे खूनी विद्रोह भी कहा गया ।
- एल एस एस ओ मूले ने इसे मुठभेड़ की संज्ञा दी
- सिदो–कान्हु ने कहा था – "अब विदेशी शासन का अंत निकट है तथा ब्रिटिश व उनके समर्थक गंगा के पार लौट जाएंगे और आपस में लड़ मरेंगे।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

नोट – सिदो कान्हु मूर्मु विश्वविद्यालय दुमका मे स्थित है जिसकी स्थापना भागलपुर विश्वविद्यालय से अलग कर के वर्ष 1992 ई. में किया गया।

नोट :– सिदो–कान्हू पार्क रांची तथा दुमका मे स्थित है।

© Click on :- Career foundation

बुद्धु भगत

- जन्म – 17 फरवरी 1792 (उरांव परिवार)
- जन्मस्थान – ग्राम–सिलगाई , प्रखंड–चान्हो , रांची
  - कोल विद्रोह के नायक

⇒बुधु भगत के नेतृत्व में ही हजारों जनजातियों ने ब्रिटिश शासक व उनके समर्थक जमींदारो के खिलाफ आंदोलन शुरू किया। यह आंदोलीन कोल विद्रोह कहलाता है।

⇒कोल विद्रोह झारखंड का पहला सुसंगठित व व्यापक विद्रोह था।

⇒13 फरवरी 1832 ई. को एक मुठभेड़ मे बुद्धु भगत शहीद हो गए थे।

CAREER FOUNDATION

⇒बुद्धु भगत को पकड़वाने के लिए 1000 रू का इनाम रखा गया था।

⇒कप्तान इम्पे के नेतृतव में एक सैन्य टुकड़ी को बुधु भगत को पकड़ने के लिए भेजा गया था। मगर समर्थको ने बुद्धु भगत को बचाने के लिए उन्हे घेर लिया। तब अंग्रजी सैन्य टुकड़ी ने गोली चलाया और बुधु–भगत सहित कई लोग शहीद हो गए।

⇒बुद्धु भगत अपने साथ हमेशा कुल्हाड़ी रखते थे तथा तिलका मांझी की तरह गुरिल्ला युद्ध मे भी निपुन्न थे।

⇒अंग्रेज से लोहा लेते हुए बुद्धु भगत के साथ–साथ उनके दो पुत्र हलधर और गिरधर भी शहीद हो गए।

© Click on :- Career foundation

नोट :– शहीद बुद्धु भगत की स्मृति मे खेलगांव मे शहीद बुद्धु भगत एक्वाटिक स्टेडियम बनाया गया है।

रघुनाथ महतो

- जन्म – ग्राम घुटियाडीह , प्रखंड–नीमडीह, जिला– सरायकेला खरसांवा मे 21 मार्च 1738 ई. को कुरमी परिवार में हुआ था।

⇒रघुनाथ महतो के ही नेतृत्व में चुआड़ विद्रोह का आंरभ 1769 में हुआ जो 1805 तक चला।

⇒जमीन व घर की बदखली ने रघुनाथ महतो को विद्रोही बना दिया।

⇒1769 में रघुनाथ महतो ने एक नारा दिया – "अपना गांव अपना राज , दूर भगाओ विदेशी राज"

⇒सन् 1778 ई. में लोटगांव के समीप एक सभा के दौरान अंग्रेजो ने उन्हे घेर लिया एवं गोली लगने से वे शहीद हो गए।

⇒रघुनाथ महतो : विद्रोही "दी ग्रेट" (चुआड़ विद्रोह का संक्षिप्त वृतांत) नामक किताब शशी भूषण महतों एवं रतन कुमार महतो के द्वारा लिखि गई है।

© Click on :- Career foundation

रानी सर्वेश्वरी

⇒महेशपुर राज के शासक गर्जन सिंह का 1758 में देहान्त हो जाने के बाद रानी सर्वेश्वरी (गर्जन सिंह की विधवा) को गद्दी पर बैठना पड़ा।

⇒1781–82 ई. में पाकुड़ के सुल्तानाबाद के आस पास के पहाड़िया लोगो ने अंग्रेजो के खिलाफ विद्रोह कर दिया । इस विद्रोह में रानी सर्वेश्वरी ने उनका भरपुर साथ दिया। यह विद्रोह पहाड़ियां विद्रोह कहलाता है।

⇒पहाड़िया सरदारों का साथ देने के कारण 1783 मे रानी पर मुकदमा चला और 6 मई 1783 ई. को उनको जमीदारी से वंचित कर दिया गया।

⇒रानी सर्वेश्वरी का अंतिम समय भागलपुर जेल मे बीता। वही उन्होनें अंतिम सांस ली।

⇒रानी सर्वेश्वरी की मृत्यु भागलपुर जेल में 6 मई 1807 ई. को गई।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

© Click on :- Career foundation